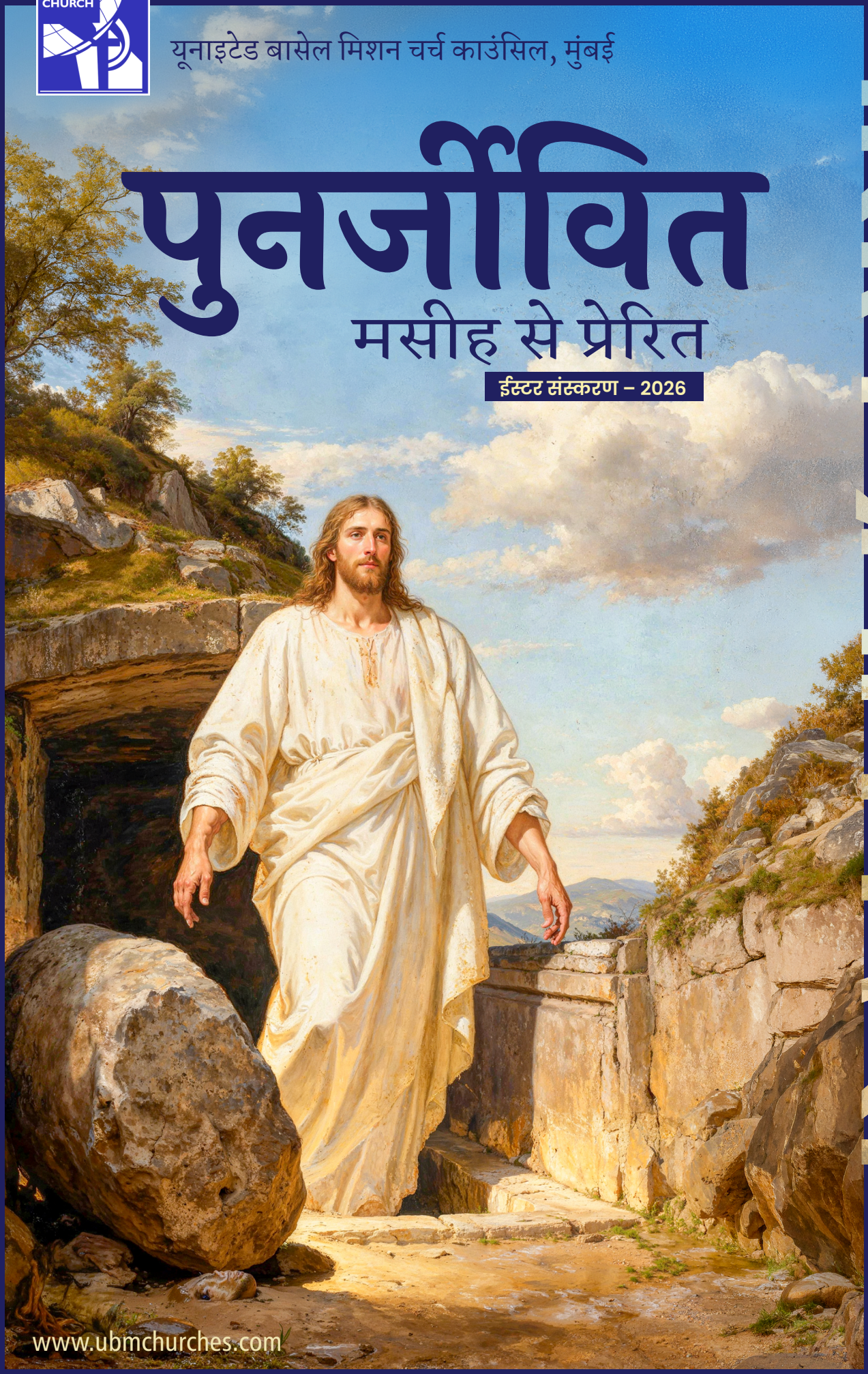
U.B.M. CHURCH

यूनाइटेड बासेल मिशन चर्च काउंसिल, मुंबई

पुनर्जीवित

मसीह से प्रेरित

ईस्टर संस्करण – 2026



www.ubmchurches.com

अप्रैल 2026

मुद्दा 18

विषयसूची

1 **संपादकीय**
रेव. सुनील जॉय
यू.बी.एम. सुशांति चर्च, बायकुला

2 **पदाधिकारियों का संदेश**
श्री ऑल्विन करकड़ा
सहायक सचिव, यू .बी .एम .चर्च काउंसिल

3 **पास्टर का संदेश**
पास्टर . डेविड काम्बले
यू .बी .एम .क्रिस्ता सन्निधि चर्च, मीरा रोड

4 **ईस्टर संदेश**
रेव. क्रिस्टिना चव्हाण
गुड शेफर्ड मराठी मेथोडिस्ट चर्च, चेंबूर

5 **आज का धर्मशास्त्र**
रेव. डॉ. प्रो. आर. एनी वॉटसन
केटीसी, मैंगलोर

6 **आज का नेतृत्व**

रेव. इमैनुएल जोन्स

प्रेस्बिटर - कर्नाटक सेंट्रल डायोसीज़

7 **आज की आध्यात्मिकता**

रेव. मेल्विन मुल्लूर

कर्नाटक नॉर्दर्न डायोसीज़

8 **परूसिया**

रेव. मैकलाइन आनंदा

यू .बी .एम . क्रिस्त शांति चर्च, मरोल

9 **मिशनरी कहानी**

रेव. जॉन एलाइज़र

यू .बी .एम . क्रिस्ता प्रीति चर्च, भांडुप

IO **कलीसियाई विभाग**

श्रीमती स्नेहल करकड़ा

यू .बी .एम . क्रिस्ता कारुण्या चर्च, डोंबिवली



संपादकीय

रेव. सुनील जॉय

यू.बी.एम. सुशांति चर्च, बायकुला

हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के पवित्र नाम में आप सभी को नमस्कार।

इस धन्य पुनरुत्थान उत्सव के अवसर पर मैं आप सभी को अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। इस पुनरुत्थान पर्व को मनाते हुए मेरी प्रार्थना है कि आप में से प्रत्येक व्यक्ति आत्मिक पुनरुत्थान का अनुभव करें,पापमय जीवन को छोड़कर पवित्र और धार्मिक जीवन व्यतीत करे।

यह पुनरुत्थान पर्व प्रत्येक मसीही के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि मसीह ने हमारे लिए क्रूस पर अपना जीवन दे दिया और तीसरे दिन मृतकों में से जी उठे। उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान ने हमारे जीवन को पूर्ण रूप से बदल दिया। उनके दुःख, मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा उन्होंने हम पापियों को शुद्ध किया और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्होंने हमें पाप की बंधन से स्वतंत्रता दी। मसीह के अनुग्रह और उनकी सेवा के लिए हम कितना भी धन्यवाद दें, वह कभी पर्याप्त नहीं होगा।

यीशु के पुनरुत्थान से हमें प्रेरणा मिलती है। अब हम विचार करें कि यह पुनरुत्थान हमें किन बातों के लिए प्रेरित करता है और हमें क्या सिखाता है।

1. मसीह का पुनरुत्थान हमें पापमय जीवन से बाहर आने की प्रेरणा देता है:-

जब आदम और हव्वा ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया, तब पाप संसार में प्रवेश कर गया। इस पाप के कारण परमेश्वर और मनुष्य के बीच का संबंध पूरी तरह टूट गया। हमारे पापों के कारण परमेश्वर हमें दंड दे सकता था, परंतु दंड देने के स्थान पर उसने हम पर अपना प्रेम प्रकट किया।

हमारे पापों के कारण हम परमेश्वर को देख नहीं सकते थे और न ही उसके साथ संबंध रख सकते थे। परंतु परमेश्वर ने स्वयं आगे बढ़कर अपना प्रेम और अनुग्रह प्रकट किया और मसीह को इस संसार में भेजा।

यीशु मसीह परमेश्वर के पुत्र हैं, परमेश्वर की प्रतिमा हैं और आरंभ से ही परमेश्वर के साथ हैं। अपने सिंहासन और अपनी महिमा को छोड़कर उन्होंने दास का रूप धारण किया और इस संसार में एक सेवक के रूप में आए। उनके संसार में आने का उद्देश्य हमें पाप से छुड़ाना था।

इसलिए जो दंड हमें मिलना चाहिए था, जो दायित्व हमें उठाना चाहिए था और जो ऋण हमें चुकाना था, वह सब उन्होंने अपने ऊपर ले लिया। क्रूस पर अपना जीवन देकर उन्होंने हमारे पापों का दंड सहा। हमारे पापों के लिए वह बलिदान का मेम्ना बने और अपने शरीर और लहू को बहाकर हमें क्षमा प्रदान की। परमेश्वर की इच्छा के अनुसार मसीह तीसरे दिन जी उठे।

मसीह का पुनरुत्थान हमें यह सिखाता और प्रेरित करता है कि हम अब पापमय जीवन न जिएँ। क्योंकि मसीह ने हमारे पापों

के लिए क्रूस पर अपना जीवन दे दिया, इसलिए यदि हम फिर से पाप में जीवन बिताएँ, तो मसीह का दुःख, मृत्यु और पुनरुत्थान व्यर्थ हो जाएगा। इसलिए पुनरुत्थान हमें प्रेरित करता है कि हम पाप न करें बल्कि पवित्र और धार्मिक जीवन जिएँ।

2. मसीह का पुनरुत्थान हमें क्षमा करने की प्रेरणा देता है:-

मानव स्वभाव ऐसा है कि यदि कोई अधिकारी या धनी व्यक्ति हमें अपमानित करे, कठोर शब्दों से हमें ठेस पहुँचाए या हमें कष्ट दे, तो हम उस बात को अपने मन में संजोकर रखते हैं। बाद में जब हमें शक्ति या धन प्राप्त होता है, तो हम उस अपमान का बदला दुगुना लेने का प्रयास करते हैं। जब कोई हमें अपमानित करता है, तब तक हमें शांति नहीं मिलती जब तक हम उससे बदला न ले लें।

परंतु यीशु के जीवन में भी ऐसी ही परिस्थितियाँ आईं। बहुत से लोगों—यहाँ तक कि अगुवों और फरीसियों—ने उनका अपमान किया, उन्हें कष्ट दिया और अंत में उन्हें क्रूस पर मृत्यु का दंड दिया। फिर भी क्रूस पर यीशु के मुख से निकला पहला वचन था-

"पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं।"

यीशु ने यह प्रार्थना पिता से की। जिन्होंने उनका अपमान किया और उन्हें कष्ट दिया, उन्हें क्षमा करना उनका स्वभाव और चरित्र था।

जब यीशु ने अपनी सेवकाई आरंभ की, तब उन्होंने बारह चेलों को चुना। ये बारह चेले प्रतिदिन उनके साथ रहे और उनकी शिक्षाओं, चमत्कारों और चिन्हों के साक्षी बने। परंतु जब रोमी सिपहिया ने यीशु को पकड़ लिया और उन्हें क्रूस पर मृत्यु का दंड दिया, तब सभी चेले उन्हें छोड़कर भाग गए। विशेष रूप से पतरस ने तीन बार यह कहकर उनका इंकार किया कि "मैं इस यीशु को नहीं जानता।"

फिर भी जब यीशु मृतकों में से जी उठे, तब उन्होंने अपने चेलों के इस व्यवहार को उनके विरुद्ध नहीं रखा। उन्होंने; उन्हें पूरे मन से क्षमा कर दिया। जब चेले भय के कारण घर के भीतर दरवाज़े बंद करके बैठे थे, तब यीशु उनके बीच प्रकट हुए और कहा—

"तुम्हें शांति मिले" (यूहन्ना 20:19)।

यीशु ने अपने चेलों को क्षमा किया, उन्हें पवित्र आत्मा दिया और उन्हें सेवा करने तथा सुसमाचार प्रचार करने के लिए भेजा।

मसीह का पुनरुत्थान हमें यह सिखाता है कि हम अपने शत्रुओं से प्रेम करें और जो लोग हमारा अपमान करते हैं उन्हें पूरे मन से क्षमा करें। यदि किसी ने आपके साथ गलत किया है और आपके मन में बदला लेने के विचार आते हैं, तो उन विचारों को दूर कर दें। मसीह ने अपने अपमान करने वालों को क्षमा किया और जब उनके अपने लोग उनके दुःख के समय उन्हें छोड़कर चले गए, तब भी उन्होंने क्रोध नहीं किया।

इसलिए यदि आप वास्तव में पुनरुत्थान पर्व मनाना चाहते हैं, तो सबसे पहले अपने शत्रुओं को क्षमा करें। पापमय जीवन से मुड़ जाएँ और पवित्र तथा धार्मिक जीवन जिएँ।

परमेश्वर आपको आशीष दे, मसीह आपको क्षमा प्रदान करें और पवित्र आत्मा आपका मार्गदर्शन करे। आमीन।



पदाधिकारियों का संदेश

श्री ऑल्विन करकड़ा

सहायक सचिव, यू .बी .एम .चर्च काउंसिल

पुनरुत्थान केवल वर्ष में एक बार मनाया जाने वाला स्मरण नहीं है।
यह एक वर्तमान और जीवित वास्तविकता है।
यह स्वर्ग की वह घोषणा है कि यीशु मसीह ही प्रभु हैं।
जिस आत्मा ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, वही आत्मा अब हम में वास करता है (रोमियों 8:11)।
यह केवल भावनात्मक उत्साह नहीं है—यह सैद्धान्तिक सत्य है, पिन्तेकुस्त की सामर्थ्य है और अनन्त आश्वासन है।
कब्र उन्हें रोक न सकी।
पाप उन्हें चुप न करा सका।
मृत्यु उन्हें पराजित न कर सकी।
क्रूस—भुगतान था।
पुनरुत्थान—रसीद है।
और पवित्र आत्मा—उसका प्रमाण और गारंटी है।
आज की दुनिया में, जहाँ चिंता, टूटे हुए परिवार, नैतिक उलझनें, आर्थिक अनिश्चितता और मौन अवसाद से लोग जूझ रहे हैं,
वहाँ पुनरुत्थान आशा की वाणी बोलता है।
निराश लोगों से— तुम्हारे वर्तमान दर्द के पार भी आशा है।
थके हुए लोगों से— तुम्हारी वर्तमान कमजोरी से परे सामर्थ्य है।
गिरे हुए लोगों से— तुम्हारी असफलता से भी बढ़कर अनुग्रह है।
“क्योंकि पाप तुम पर प्रभुता न करेगा” (रोमियों 6:14)।
यह केवल सकारात्मक सोच नहीं है,यह परमेश्वर के राज्य का अधिकार है।
क्योंकि वह जी उठा, पाप की दासता टूट चुकी है।
क्योंकि वह जीवित है, हम विजय में चलते हैं।
पुनरुत्थान हर असफलता के ऊपर परमेश्वर की साहसिक घोषणा है—
तुम समाप्त नहीं हुए हो।
तुम त्यागे नहीं गए हो।
तुम पराजित नहीं हो।

मसीह में हम जयवन्त से भी बढ़कर हैं (रोमियों 8:37)।
यह संघर्ष को नकार कर नहीं, बल्कि आत्मा की सामर्थ्य से जय प्राप्त करके है।
पिन्तेकुस्त हमें स्मरण दिलाता है कि पुनरुत्थान की सामर्थ्य खाली कब्र तक सीमित नहीं रही।
वह कलीसिया पर उंडेली गई।
पवित्र आत्मा साधारण विश्वासियों को असाधारण जीवन जीने की सामर्थ्य देता है।
और यह आशा केवल आज के लिए नहीं है—यह अनन्त है।
“क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतर आएँगे...” (1 थिस्सलुनीकियों 4:16)।
क्योंकि वह जी उठा, हम भी जी उठेंगे।
यह नश्वर देह अविनाशी को पहन लेगी (1 कुरिन्थियों 15:53)।
हमारा राजा आ रहा है और हम सदा उसके साथ राज्य करेंगे।
कब्र खाली है।
आत्मा कार्यरत है।
कलीसिया जीवित है।
हमारा भविष्य सुरक्षित है।
इस पुनरुत्थान के मौसम में, युवाओं में पवित्र साहस जागे,
बुज़ुर्गों में अडिग विश्वास दृढ़ हो,
और हर हृदय में नई आत्मिक अग्नि प्रज्वलित हो।
हम धन्य हैं।
हम छुड़ाए गए हैं।
हम आत्मा से भरे हुए हैं।
हम मसीह में विजयी हैं।
मसीह जी उठा है
और हम उसमें जी उठते हैं।
विश्वास और आशा के साथ।



पास्टर का संदेश

पास्टर . डेविड काम्बले

यू .बी .एम .क्रिस्ता सन्निधि चर्च, मीरा रोड

हमारी आवश्यकता में सामर्थ – पुनर्जीवित मसीह के द्वारा

मानव जीवन अक्सर गहरी आवश्यकताओं के क्षणों से भरा होता है। ऐसे समय आते हैं जब हम दुःख, अनिश्चितता, कमजोरी और भय का सामना करते हैं। ऐसे क्षणों में यीशु मसीह का पुनरुत्थान हमारे लिए आशा और प्रेरणा का एक शक्तिशाली स्रोत बन जाता है। जीवित मसीह हमें स्मरण दिलाते हैं कि परमेश्वर की शक्ति हर मानवीय सीमा से बड़ी है। जब स्त्रियाँ सुबह-सुबह कब्र पर आईं, तो वे शोक और उलझन से भरी हुई थीं। परन्तु स्वर्गदूत ने घोषणा की, "वह यहाँ नहीं है; वह जी उठा है!" (लूका 24:6)। इस घोषणा ने उनके दुःख को आनन्द में और उनकी निराशा को आशा में बदल दिया।

पुनरुत्थान हमें सिखाता है कि परमेश्वर अक्सर हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता के समय सबसे अधिक सामर्थ के साथ कार्य करता है। चेलों ने यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने को देखा था और उन्हें लगा कि सब कुछ समाप्त हो गया है। उनकी सारी आशाएँ मानो उसी कब्र में दफ़न हो गई थीं। परन्तु तीसरे दिन, परमेश्वर ने मसीह को मृतकों में से जिलाकर अपनी महान शक्ति प्रकट की। जो अंत प्रतीत हो रहा था, वह एक महिमामय आरंभ बन गया। यह हमें याद दिलाता है कि जब परिस्थितियाँ निराशाजनक लगती हैं, तब भी परमेश्वर पर्दे के पीछे कार्य कर रहा होता है और एक बड़ी विजय की तैयारी कर रहा होता है।

हमारे व्यक्तिगत संघर्षों में, पुनर्जीवित मसीह हमारी शक्ति का स्रोत बनते हैं। जब यीशु अपने पुनरुत्थान के बाद चेलों के सामने प्रकट हुए, वे भय के कारण छिपे हुए थे। तब उन्होंने उनके बीच आकर कहा, "तुम्हें शांति मिले" (यूहन्ना 20:19)। ये सरल किन्तु सामर्थी वचन हमें याद दिलाते हैं कि मसीह हमारी कमजोरी में हमसे मिलते हैं और हमारे व्याकुल हृदयों में शांति लाते हैं। जब हम जीवन के बोझ से दबे हुए महसूस करते हैं, तब जीवित प्रभु की उपस्थिति हमें आश्वासन देती है कि हम अकेले नहीं हैं।

पुनरुत्थान हमें यह भी प्रेरित करता है कि हम परमेश्वर पर भरोसा रखें, भले ही हम परिणाम को न देख सकें। जीवित मसीह में विश्वास हमें सिखाता है कि परमेश्वर की योजनाएँ हमारी समझ से कहीं बड़ी हैं। क्रूस हार जैसी दिखती था, परन्तु वही विजय का मार्ग बन गई। इसी प्रकार, आज की हमारी चुनौतियाँ भारी लग सकती हैं, परन्तु परमेश्वर के हाथों में वे हमारे विकास और गवाही के अवसर बन सकती हैं। जीवित मसीह हमें आमंत्रित करते हैं कि हम अपनी आवश्यकताएँ, भय और आशाएँ उनके हाथों में सौंप दें।

इसके अतिरिक्त, पुनरुत्थान हमें नए साहस के साथ जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित करता है। पुनर्जीवित यीशु से मिलने के बाद चेले भयभीत अनुयायियों से साहसी सुसमाचार के गवाह बन गए। उनका जीवन मसीह की सामर्थ का प्रमाण बन गया। यह परिवर्तन दर्शाता है कि पुनरुत्थान केवल एक ऐतिहासिक घटना नहीं है, बल्कि एक जीवित वास्तविकता है जो आज भी हृदयों को बदलती है। जब हम अपने जीवन में जीवित मसीह का अनुभव करते हैं, तो हमें कठिनाइयों का सामना करने की

शक्ति और विश्वास की यात्रा को जारी रखने का साहस मिलता है।

हर आवश्यकता के समय में, पुनरुत्थान हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर की शक्ति कभी भी मानवीय परिस्थितियों से सीमित नहीं होती। खाली कब्र विजय, आशा और नए जीवन का प्रतीक है। क्योंकि मसीह जीवित हैं, हमारे संघर्ष हमारे भविष्य को निर्धारित नहीं करते, बल्कि वे स्थान बन जाते हैं जहाँ परमेश्वर का अनुग्रह प्रकट होता है।

अतः जब भी हम किसी भी प्रकार की आवश्यकता में हों—चाहे वह आत्मिक, भावनात्मक या शारीरिक हो—हम पुनर्जीवित मसीह की ओर देख सकते हैं। वह जीवित उद्धारकर्ता है जो हमारे दुःख को समझता है, हमारे विश्वास को मजबूत करता है, और हमें आशा और जीवन से भरे भविष्य की ओर ले जाता है। क्योंकि वह जीवित है, हम भी अपनी चुनौतियों से ऊपर उठ सकते हैं और परमेश्वर के वादों में विश्वास के साथ आगे बढ़ सकते हैं।



ईस्टर संदेश

रेव. क्रिस्टिना चव्हाण

गुड शेफर्ड मराठी मेथोडिस्ट चर्च, चेंबूर

28 अप्रैल 2023, शुक्रवार को, अपने बेटे स्टीव के पास बैठकर, उसके हाथों को अपने हाथों में थामे हुए, वह एक अलग ही अनुभव था। इस विशेष क्षण में, उसके एक हाथ का स्पर्श धीरे-धीरे ठंडा होता जा रहा था, लेकिन मेरे हृदय में जीवित मसीह पर मेरा विश्वास तनिक भी नहीं डगमगाया। मशीन की कर्कश आवाज़, गुलाबी कपड़ों में एक महिला और नीले कपड़ों में एक पुरुष की दृष्टि—सब कुछ उस रात एक अलग ही संदेश दे रहे थे। मशीन की बीप की आवाज़ बदलती जा रही थी, और उसकी अंतिम सांस उस ऑक्सीजन मास्क पर स्पष्ट दिखाई दे रही थी, जो मेरे प्रिय बेटे के उस मासूम, सुंदर चेहरे को ढके हुए था। तब तक एक नया दिन शुरू हो चुका था।जब मैं काफी समय बाद अपनी चेतना में लौटी, तो मैंने स्वयं को एक परिवर्तित व्यक्ति के रूप में पाया। मेरे उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के पुनरुत्थान का सच्चा अर्थ और सार मेरे जीवन में अत्यंत स्पष्ट और व्यक्तिगत हो गया था। "क्यों?" का प्रश्न अब विश्वास की दृढ़ घोषणा में बदल चुका था।निस्संदेह, प्रभु का पुनरुत्थान हमें प्रेरित करता है, आश्वस्त करता है, और हमारे जीवन में परिवर्तन लाता है।क. प्रभु का पुनरुत्थान: पुराने जीवन पर नए जीवन की विजयपुनरुत्थान हमें प्रेरित करता है कि हम इस अस्थायी जीवन की अपनी सोच को बदलें और आत्मिक विकास पर ध्यान केंद्रित करें, परमेश्वर के उन वचनों पर भरोसा रखते हुए जो अनन्त जीवन का वादा करते हैं (यूहन्ना 3:16; 10:28; 6:47)।एक विश्वास करने वाला, जो प्रभु के पुनरुत्थान से प्रेरित होता है, अपने पुराने स्वभाव को त्यागकर एक नया जीवन अपनाता है, जो प्रेम, करुणा, नम्रता और सेवा से परिपूर्ण होता है।पौलुस, जो मसीहियों का सताने वाला था, दमिश्क के मार्ग पर पुनरुत्थित प्रभु से मिलने के बाद प्रेरित बन गया। फिलिप्पियों 3:10 में वह कहता है कि "मैं मसीह को जानूं और उसके पुनरुत्थान की सामर्थ्य को भी।"ख. पुनरुत्थान: निराशा के बीच आशा का जीवनहमारे प्रभु यीशु मसीह के पुनरुत्थान से प्रेरित होकर, हम मृत्यु के भय के समय भी आशा के साथ जीना सीखते हैं। पुनरुत्थित प्रभु हमें विश्वास से भरा हुआ हृदय देते हैं और हमें उनकी मृत्यु पर विजय की याद दिलाते हैं।यीशु के चेले उनके क्रूस पर चढ़ाए जाने के बाद भयभीत हो गए थे। उन्होंने अपनी आशा खो दी थी कि यीशु ही मसीह हैं। पतरस का यीशु का इनकार करना उनके भय का प्रमाण है।लेकिन उनका परिवर्तन तब हुआ जब पुनरुत्थित यीशु ने उन्हें दर्शन दिया और स्वयं को प्रकट किया। उनकी डरपोक स्थिति एक साहसी सुसमाचार प्रचारक में बदल गई।ग. प्रभु का पुनरुत्थान: नई शुरुआत और सेवा का जीवनप्रभु यीशु का पुनरुत्थान हमें मानवजाति की सेवा के लिए तैयार करता है, ताकि हम अपने व्यक्तिगत पुनरुत्थान के अनुभवों को दूसरों के साथ साझा करें और परमेश्वर के दिए हुए विभिन्न वरदानों के द्वारा नए सिरे से सेवा आरंभ करें। "जैसा कि हर एक ने वरदान पाया है, वैसे ही एक- दूसरे की सेवा करो, परमेश्वर के अनुग्रह के भले भण्डारी बनकर।" (1 पतरस 4:10)मरियम मगदलीनी और अन्य दो स्त्रियाँ सबसे पहले पुनरुत्थित मसीह से मिलीं। पुनरुत्थान से प्रेरित होकर, वे शोक में रहने के बजाय नई शुरुआत करते हुए यह शुभ समाचार प्रेरितों को सुनाने लगीं।आइए, हम पुनरुत्थित प्रभु से प्रेरित होकर एक नया जीवन जिएँ, जो हमें वर्तमान में आशा और मृत्यु के बाद अनन्त जीवन की ओर ले जाता है, जो हमारे प्रभु ने हमें प्रदान किया है।



आज का धर्मशास्त्र

रेव. डॉ. प्रो. आर. एनी वॉटसन

केटीसी, मैंगलोर

चालीस दिनों के उपवास ने हमें क्रूस पर यीशु के दुख और पीड़ा के चिंतन की ओर अग्रसर किया। परमेश्वर ने संसार से इतना प्रेम किया कि उसने हमारे पापों के प्रायश्चित और मानवता को मुक्ति दिलाने के लिए अपना इकलौता पुत्र दे दिया। परमेश्वर के पुत्र, महायाजक यीशु ने हमारे लिए हमारे सभी पापों और परमेश्वर के क्रोध को सहा और हमारे अधर्म के लिए कुचला गया और एक बार हमेशा के लिए मर गया (यशायाह 53) । उसने अपने क्रूस पर चढ़कर फिरौती का भुगतान किया।

हालाँकि, परमेश्वर का छुटकारे का मिशन क्रूस या कब्र पर समाप्त नहीं हुआ, बल्कि यीशु मसीह के मृतकों में से जी उठने की शक्ति में कब्र से परे जारी है और जीवित है (यशायाह 53:10), और जो कोई उस पर विश्वास करता है, चाहे वे मर भी जाएँ, फिर भी वे उसमें जीवित रहेंगे (यूहन्ना 11:24-25)। यूहन्ना 5:26 का सुसमाचार कहता है: "क्योंकि जैसे पिता अपने में जीवन रखता है, वैसे ही उसने पुत्र को भी अपने में जीवन रखने की अनुमति दी है।" अपने पुनरुत्थान के द्वारा, यीशु ने “मृत्यु का नाश किया और जीवन और अमरता को सुसमाचार के द्वारा प्रकाशमान किया...” (2 तीमुथियुस 1:10)

मृत्यु और पुनरुत्थान: पवित्रशास्त्र की पूर्ति

ईस्टर न केवल यीशु के मृतकों में से पुनरुत्थान का उत्सव है, बल्कि मृत्यु की दुष्ट शक्ति पर विजय भी है, जिसने उन्हें क्रूर पीड़ाएँ दी थीं और क्रूस पर चढ़ाया था, जिसके कारण उन्हें मृत्यु और कब्र में दफ़नाया गया था। उनकी मृत्यु और दफ़नाया जाना पवित्रशास्त्र के अनुसार पूरा होना था (देखें यशायाह ५३:९-१०)। यूहन्ना २:२२ वर्णन करता है, “जब वह मरे हुओं में से जी उठा, तो उसके चेलों को स्मरण आया कि उसने यह कहा था, और उन्होंने पवित्रशास्त्र और यीशु के वचन पर विश्वास किया।“ १ कुरिं. १५:४ पौलुस पुष्टि करता है कि “वह गाड़ा गया, कि पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी उठा...”

फिर भी, यदि वह पुनर्जीवित नहीं हुआ होता तो यह दुष्ट शक्ति की जीत होती। हालाँकि इस दुनिया की दुष्ट शक्ति ने एक पल के लिए जीत देखी जब उसने क्रूस पर पीड़ा सही और मृत्यु को प्राप्त किया और उसे दफ़नाया गया, लेकिन उनकी खुशी ज़्यादा देर तक नहीं टिकी। अपनी जीत सुनिश्चित करने के लिए उन्होंने कब्र को बंद करने के लिए एक बहुत बड़ा पत्थर रख दिया ताकि उसका शरीर कब्र से बाहर न निकाला जाए और उसके शिष्यों द्वारा उसके पुनरुत्थान की कहानी गढ़ी जा सके, क्योंकि उसने पहले ही तीसरे दिन मृतकों में से उसके जी उठने के बारे में बात की थी। समकालिक सुसमाचार और यूहन्ना के सुसमाचार में यीशु के पुनरुत्थान और उसके शिष्यों और लोगों के बीच उसके प्रकट होने का वर्णन है (मत्ती २८; मरकुस १६; लूका २४; यूहन्ना २०, २१; १ कुरिं. १५ भी)। पिन्तेकुस्त के दिन पतरस के उपदेश में वह कहता है कि “इसी यीशु को परमेश्वर की निश्चित योजना और पूर्वज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया, और तुम ने अधर्मियों के हाथ से क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला। परमेश्वर ने उसे मृत्यु के बन्धनों से छुड़ाकर जिलाया, क्योंकि उसके लिये उसके वश में रहना असम्भव था,...” (प्रेरितों २:२३-२४; ३:१५ भी देखें)।

खाली कब्र या कब्र उनके पुनरुत्थान और मृत्यु की शक्ति पर उनकी जीत की सबूत थी। मत्ती २८: ५-६; मरकुस १६:६ में कब्र देखने आई महिलाओं को निमंत्रण दिया गया था, "वह यहाँ नहीं है, क्योंकि वह जी उठा है, जैसा उसने कहा था। आओ, वह स्थान देखो जहाँ वह लेटा था..." यीशु स्वयं जो मृतकों में से जी उठा था, महिलाओं के सामने प्रकट हुआ, उन्हें आश्वस्त किया कि वे डरें नहीं, बल्कि दूसरों से कहें कि वे गलील जाएँ ताकि वे वहाँ उसे देखें (मत्ती २८:१०; मरकुस १६:७)। पुनरुत्थान की आशा पुनरुत्थान की आशा ईसाई धर्म के लिए प्राथमिक महत्व रखती है और ईसाई धर्मशास्त्र का एक अनिवार्य पहलू है। परमेश्वर अपने लोगों को मृतकों में से उठाकर नई सृष्टि में अनंत जीवन प्रदान करेगा। यीशु ने कहा "...क्योंकि वह समय आता है जब वे सभी जो कब्रों में हैं, उसका शब्द सुनकर बाहर निकलेंगे, जिन्होंने अच्छा किया है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे और जिन्होंने बुरा किया है वे न्याय के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे" (यूहन्ना ५:२८-२९)। पुनरुत्थान की आशा परमेश्वर की पुनर्स्थापना और छुटकारे की योजना का अभिन्न अंग है, और जैसा कि हम पुराने नियम में देखते हैं, इसकी भविष्यवाणी की गई थी। (व्यवस्थाविवरण ३२:३९; १ शमूएल २:६; भजन १६:९-११; ७३:२३-२६; ४०:१५; यशायाह २५:७-८; २६:१९; एज ३७:१-१४; यशायाह २६:१९; दानिय्येल १२:२-३)। हालाँकि पुराने नियम में पुनरुत्थान के बारे में सीधे तौर पर बात नहीं की गई है, लेकिन पुनर्स्थापना पुनरुत्थान की कल्पना को दर्शाती है। कब्र से उठने वाले शवों और निर्वासन से वापसी की तस्वीरें निश्चित रूप से पुनरुत्थान की कल्पना हैं।खाली कब्र या कब्र उनके पुनरुत्थान और मृत्यु की शक्ति पर उनकी जीत का सबूत थी। मत्ती २८: ५-६; मरकुस १६:६ में कब्र देखने आई महिलाओं को निमंत्रण दिया गया था, "वह यहाँ नहीं है, क्योंकि वह जी उठा है, जैसा उसने कहा था। आओ, वह स्थान देखो जहाँ वह लेटा था..." यीशु स्वयं जो मृतकों में से जी उठा था, महिलाओं के सामने प्रकट हुआ, उन्हें आश्वस्त किया कि वे डरें नहीं, बल्कि दूसरों से कहें कि वे गलील जाएँ ताकि वे वहाँ उसे देखें (मत्ती २८:१०; मरकुस १६:७)। पुनरुत्थान की आशा पुनरुत्थान की आशा ईसाई धर्म के लिए प्राथमिक महत्व रखती है और ईसाई धर्मशास्त्र का एक अनिवार्य पहलू है। परमेश्वर अपने लोगों को मृतकों में से उठाकर नई सृष्टि में अनंत जीवन प्रदान करेगा। यीशु के कथन "...क्योंकि वह समय आता है जब वे सभी जो कब्रों में हैं, उसका शब्द सुनकर बाहर निकलेंगे, जिन्होंने अच्छा किया है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे और जिन्होंने बुरा किया है वे न्याय के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे" (यूहन्ना ५:२८-२९)। पुनरुत्थान की आशा परमेश्वर की पुनर्स्थापना और छुटकारे की योजना का अभिन्न अंग है, और जैसा कि हम पुराने नियम में देखते हैं, इसकी भविष्यवाणी की गई थी। (व्यवस्थाविवरण ३२:३९; १ शमूएल २:६; भजन १६:९-११; ७३:२३-२६; ४०:१५; यशायाह २५:७-८; २६:१९; एज ३७:१-१४; यशायाह २६:१९; दानिय्येल १२:२-३)। हालाँकि पुराने नियम में पुनरुत्थान के बारे में सीधे तौर पर बात नहीं की गई है, लेकिन पुनर्स्थापना पुनरुत्थान की कल्पना को दर्शाती है। कब्र से उठने वाले शवों और निर्वासन से वापसी की तस्वीरें निश्चित रूप से पुनरुत्थान की कल्पना हैं।

नए नियम में सुसमाचार के विवरण बताते हैं कि कैसे यीशु स्वयं अपने सेवा के दौरान, क्रूस पर चढ़ने से पहले, मृतकों में से कुछ लोगों को उठाते हैं। (लूका ७:११-१७; यूहन्ना ११) लाज़र की बहन मार्था पुनरुत्थान और यीशु मसीह में अपने विश्वास की पुष्टि करती है, "मुझे पता है कि वह अंतिम दिन पुनरुत्थान में फिर से जीवित हो जाएगा... और मैं विश्वास करती हूं कि आप मसीह, परमेश्वर के पुत्र हैं, जो दुनिया में आने वाले हैं।" यीशु ने कहा "मैं पुनरुत्थान और जीवन हूँ। जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, वह यदि मर भी जाए, तौभी जीएगा..." (यूहन्ना ११:२४-२५)। यीशु ने इस दुनिया में अवतार लिया ताकि हम "जीवन पा सकें और वह बहुतायत से हो" क्योंकि वह "मार्ग और सत्य और जीवन" है। (यूहन्ना १०:१०ब; यूहन्ना १४:६)

अंतिम पुनरुत्थान

मृतकों में से अपने पुनरुत्थान की शक्ति के माध्यम से, यीशु मसीह अपने पुनः आगमन में मृत्यु की शक्ति को नष्ट कर देता है, जो कि अंतिम सत्य है (१ कुरिन्थियों १५:२४-२६)। पहले आदम की अवज्ञा ने संसार में मृत्यु और दण्ड लाया, लेकिन दूसरे

आदम यीशु ने अपनी आज्ञाकारिता और क्रूस पर चढ़ने के लिए खुद को अर्पित करने और अपने पुनरुत्थान के माध्यम से, सभी मानवता के लिए औचित्य और अनन्त जीवन लाया (रोमियों ५:१२-२१; १ कुरिन्थियों १५:२०-२३)। जिस परमेश्वर ने अपने पुत्र को मृत्यु की शक्ति से उठाया, उसने अपनी दया से यीशु मसीह के पुनरुत्थान के माध्यम से सभी मनुष्यों को कब्र से परे अनन्त जीवन की आशा दी है, और "एक अविनाशी, निष्कलंक और अजर विरासत के लिए जो स्वर्ग में रखी गई है... जो परमेश्वर की सामर्थ्य से विश्वास के द्वारा उस उद्धार के लिए सुरक्षित रखी जाती है जो अंतिम समय में प्रकट होने वाली है।" (१ पतरस ३-५)। यद्यपि हम मर जाते हैं, हम जीवित मसीह के द्वारा अनन्त जीवन के लिए उठाए जाएँगे ताकि उसके पुनः आगमन पर उसकी महिमा में भागीदार बन सकें। (रोमियों ८:१७-१८; कुलुस्सियों ३:४; २ थिस्सलुनीकियों २:१४; कुलुस्सियों १:२७)।

यीशु ने अपने पुनरुत्थान में पाप और मृत्यु पर विजय प्राप्त की और जीवन लाया जो नई सृष्टि और पुनरुत्थान का उदय है। उसके पास मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ हैं (प्रकाशितवाक्य १:१८)। जो लोग उसमें हैं और उस पर विश्वास करते हैं, वे उसके फिर से आने पर मृतकों में से जी उठेंगे (१ कुरिन्थियों १५:२३)। यीशु अपने पुनरुत्थान में "जीवन देने वाली आत्मा बन गया," और परमेश्वर ने "हमें मसीह के साथ जीवित किया" और परमेश्वर की कृपा से हम अपने अपराधों से बच गए हैं..." (१ कुरिन्थियों १५:४५; इफिसियों २:५)।

हालाँकि मृत्यु हर जन्मे हुए प्राणी के लिए एक वास्तविकता है, कब्र अंत नहीं है, बल्कि परमेश्वर के छुटकारे के कार्यों में कब्र से परे जीवन है (रोमियों ८:११)। हमें युगांतिक पुनरुत्थान में आशा है, कि परमेश्वर अपनी कृपा और प्रेम में हमें मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से मृत्यु से छुड़ाता है, और हमें उसकी महिमा साझा करने के लिए उसकी उपस्थिति में लाता है, क्योंकि हम उसके साथ नए जीवन के साथ उसकी नई रचना बन जाते हैं। इसलिए, जबकि हम अभी भी इस दुनिया में रह रहे



आज का नेतृत्व

रेव. इमैनुएल जोन्स

प्रेस्बिटर - कर्नाटक सेंट्रल डायोसीज़

“कुछ लोगों ने कहा – मैं अलग दिखना चाहता हूँ,

कुछ ने कहा – मैं साथ खड़ा हूँ,

पर जो भी हुआ, खड़े होने की हिम्मत केवल कुछ ही आवाज़ों में थी।”

यही आज के नेतृत्व की वास्तविकता है। इसे कुछ हद तक समझा जा सकता है, क्योंकि नेतृत्व अब केवल ज़िम्मेदारी का सही और प्रभावी निर्वाह नहीं रहा, बल्कि अपने आप को शक्तिशाली सिद्ध करने की आकांक्षा बन गया है—और इस प्रक्रिया में सच्ची ज़िम्मेदारी को भुला दिया जाता है।

लोकप्रिय नेतृत्व (Popular Leadership)

यीशु के चेले भी इसके इच्छुक थे। याकूब और यूहन्ना ने चाहा कि वे यीशु के दाएँ और बाएँ बैठें। वे यह सोच रहे थे कि जब यीशु सामर्थी होंगे, तो उन्हें विशेष स्थान मिलेगा। यह दर्शाता है कि लोग नेतृत्व के साथ आने वाली प्रसिद्धि और शक्ति को चाहते हैं।

ईश्वर-समान नेतृत्व (God-mode Leadership)

प्राचीन सभ्यताओं में शासकों को पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधि माना जाता था। इसका प्रारंभिक उदाहरण फिरौन में दिखता है, जब इस्राएली उसकी दासता में थे। ऐसे नेता सोचते हैं कि जो वे करते हैं वही सही है और उन्हें रोकने वाला कोई नहीं है। आज भी यह विश्व की शक्तिशाली राष्ट्रों और उनके नेताओं में देखा जा सकता है, जो कमजोर और विकासशील देशों पर अपना दबाव बनाना चाहते हैं।

गिरगिट जैसा नेतृत्व (Chameleon Leadership)

“मैं तुम्हारे लिए काम करता हूँ” – यह आवाज़ सुनाई देती है, लेकिन वास्तव में ऐसा नेता अपने स्वार्थ और लाभ के लिए काम करता है। झूठे आश्वासन और उम्मीदें देना, लोगों का शोषण ही है—भेड़ की खाल में भेड़िया जैसा।

ये सभी आज के नेतृत्व की मुख्य तस्वीरें हैं, जो सच्चे नेतृत्व के सार और सत्य को मिटा देता है।

सच्चा नेतृत्व

सच्चा नेता सदैव परमेश्वर ही रहा है—हमारे जीवन में, कलीसिया में, समाज में और पूरे संसार में। प्रारंभ से ही उसने अपनी सृष्टि के लिए केवल भलाई चाही। वह चाहता था कि सृष्टि झूठ, धोखे और प्रलोभन से अछूती रहे। परंतु मनुष्य प्रलोभन में गिर गया (उत्पत्ति 2 और 3), और परमेश्वर के नेतृत्व को छोड़कर स्वयं अपने जीवन का नियंत्रण लेने लगा।

फिर भी परमेश्वर ने कभी हार नहीं मानी। उसने पूर्वजों, नेताओं, न्यायियों, राजाओं, भविष्यद्वक्ताओं और अंततः अपने पुत्र यीशु मसीह के माध्यम से मानवता का मार्गदर्शन किया।

भजन संहिता 121:4 का वचन कहता है:

“देखो, इस्राएल का रक्षक न ऊंघेगा और न सोएगा।”

यही नेतृत्व की महानतम विशेषता है। इसलिए कैथोलिक धर्मशास्त्री थॉमस एक्विनास परमेश्वर को “अचल प्रेरक” (Unmoved Mover) कहते हैं।

यीशु मसीह – आदर्श नेता

सच्चे नेतृत्व का पूर्ण रूप हमारे प्रभु यीशु मसीह के जीवन, विश्वास और सेवा में दिखाई देता है—

वह नेता जिसे स्वयं को सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं थी,

वह परमेश्वर जिसे अपनी पहचान साबित करने की ज़रूरत नहीं थी,

वह व्यक्ति जिसने अपने लोगों के लिए अपना बलिदान दिया।

आज की चुनौती

आज हम कहते हैं कि हमें ऐसा आदर्श नेतृत्व चाहिए, लेकिन अक्सर हम उसे पहचानने में असफल हो जाते हैं। क्योंकि सच्चा नेतृत्व शोर नहीं करता, लोगों को खुश करने के लिए नहीं जीता, बल्कि जो सही है वही करता है—चाहे वह जीवन में हो, समाज में, राजनीति में या कलीसिया में।

हम केवल पहचानने में ही नहीं चूकते, बल्कि ऐसे सच्चे नेताओं का विरोध भी करते हैं। जब वे सत्य के लिए खड़े होते हैं, तो हम अपनी सुरक्षा के लिए चुप रहते हैं।

इसी कारण भीड़ ने बरअब्बा को चुना, यीशु को नहीं—

क्योंकि वे रोमी और यहूदी नेताओं के साथ सुरक्षित रहना चाहते थे, बजाय सत्य के साथ खड़े होने के।

निष्कर्ष

आज हमारे सामने प्रश्न है—

क्या हम भीड़ का हिस्सा बनेंगे?

या उन कुछ लोगों में होंगे जो सत्य के लिए खड़े होते हैं?

क्योंकि मैं मानता हूँ कि:

“नेतृत्व केवल यह नहीं है कि नेता क्या है, बल्कि यह भी है कि लोग नेता को क्या बनने देते हैं और किस दिशा में उसे आगे बढ़ाते हैं।”

आज का नेतृत्व कार्य और सोच—दोनों से परिभाषित होता है।



आज की आध्यात्मिकता

रेव. मेल्विन मुल्लूर

कर्नाटक नॉर्दर्न डायोसीज़

आध्यात्मिकता हमारे विश्वास के अभ्यास को दर्शाती है। यह हमारे विश्वास की व्यावहारिक अभिव्यक्ति को समझने के बारे में है—हम किस प्रकार आध्यात्मिकता में सहभागी होते हैं और अपने विश्वास का पालन करते हुए परमेश्वर के और निकट कैसे चलते हैं। आध्यात्मिकता का उद्देश्य परमेश्वर के सामने विश्वासयोग्य जीवन जीना और अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ना है। यह परमेश्वर के प्रति आदर और भक्ति से भरे जीवन को प्रकट करती है।

“क्योंकि शारीरिक अभ्यास से कुछ लाभ होता है, पर भक्ति सब बातों के लिए लाभदायक है, क्योंकि उसमें वर्तमान जीवन और आने वाले जीवन दोनों की प्रतिज्ञा है” (1 तीमुथियुस 4:8)। जब पौलुस तीमुथियुस को लिखता है, तो वह इस बात पर बल देता है कि भक्ति शारीरिक अनुशासन से बढ़कर है क्योंकि उसमें जीवन का वादा निहित है।

“यदि हमने तुम्हारे बीच आत्मिक वस्तुएँ बोई हैं, तो क्या यह बड़ी बात है कि हम तुम से शारीरिक वस्तुएँ काटें?” (1 कुरिन्थियों 9:11)। जब पौलुस कुरिन्थियों को लिखता है, तो वह आत्मिक और भौतिक के बीच के संबंध को दर्शाता है, जो एक ऐसे जीवन की ओर संकेत करता है जहाँ आध्यात्मिकता दोनों आयामों में प्रकट होती है।

भारतीय संस्कृति के अनुसार, योग, मौन और ध्यान जैसे अभ्यास आध्यात्मिकता में सहभागी होने के साधन माने जाते हैं। परंतु आज के मसीही संदर्भ में आध्यात्मिकता को अक्सर अलग दृष्टिकोण से देखा जाता है। जैसे जीवन को पेशेवर, पारिवारिक और व्यक्तिगत क्षेत्रों में बाँटा जाता है, वैसे ही कभी-कभी आध्यात्मिकता को भी एक अलग श्रेणी मान लिया जाता है। यह एक संकीर्ण समझ है कि आध्यात्मिकता केवल बाइबल ध्यान, प्रार्थना और आराधना तक सीमित है। यद्यपि ये सभी हमें आत्मिक रूप से सशक्त करते हैं, परंतु ये सम्पूर्ण आध्यात्मिक जीवन नहीं हैं, बल्कि ऐसे साधन हैं जो हमें गहरे आत्मिक जीवन की ओर प्रेरित करते हैं।

इस संदर्भ में हमें समझना चाहिए कि मसीही विश्वास केवल सैद्धांतिक नहीं, बल्कि व्यावहारिक है।

लूका 24

1. आत्मिक प्रकाश की वास्तविकता

जब दो चेले यरूशलेम से इम्माऊस नामक गाँव की ओर जा रहे थे, तब जी उठे यीशु उनके साथ हो लिए और उनसे बातचीत करने लगे। यद्यपि वे लगभग साढ़े तीन वर्षों तक यीशु के साथ रहे थे और जानते थे कि वही प्रतिज्ञात मसीहा हैं, फिर भी वे भविष्यद्वक्ताओं के वचनों पर विश्वास नहीं कर पाए। तब यीशु ने उन्हें समझाया और मूसा तथा सब भविष्यद्वक्ताओं से आरंभ करके अपने विषय में लिखी बातों को बताया।

फिर भी वे उन्हें पहचान न सके। बाद में जब यीशु ने उनके साथ बैठकर रोटी ली, धन्यवाद किया, उसे तोड़ा और उन्हें दिया, तब उनकी आँखें खुल गईं और उन्होंने उसे पहचान लिया।

आज एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है: क्या हम सच्चे आत्मिक प्रकाश की ओर अग्रसर हो रहे हैं? यद्यपि हमें परमेश्वर के वचन का ज्ञान है और उसके कार्यों का अनुभव भी है, फिर भी परीक्षाओं के समय हम अक्सर यह पहचानने में असफल हो जाते हैं कि जी उठा यीशु हमारे निकट है। जैसे यीशु ने अपनी उपस्थिति से चेलों को सशक्त किया, वैसे ही वह हमें भी सशक्त कर सकता है।

मरकुस 16

2. संदर्भित विश्वास की वास्तविकता
सप्ताह के पहले दिन प्रातःकाल यीशु जी उठकर सबसे पहले मरियम मगदलीनी को दिखाई दिए। उसने जाकर उनके साथ रहने वालों को यह समाचार दिया, परंतु उन्होंने उस पर विश्वास नहीं किया। बाद में दो अन्य चेलों ने भी यही बताया, फिर भी उन पर विश्वास नहीं किया गया। अंत में यीशु ग्यारहों को दिखाई दिए और उनके अविश्वास और कठोर हृदय के कारण उन्हें डाँटा, और उन्हें उनके कार्य के विषय में निर्देश दिया।

आज यदि हमारे आत्मिक जीवन में मनन का अभाव है, तो उसका क्या लाभ? हम यीशु के बारे में सुनते हैं, उसका अनुभव करते हैं, आशीषें प्राप्त करते हैं, फिर भी कठिनाइयों के समय संदेह और अविश्वास में पड़ जाते हैं। "परमेश्वर मेरी पीड़ा नहीं देखता" या "वह मेरी प्रार्थना नहीं सुनता" जैसे विचार हमारे हृदय को कठोर कर देते हैं और हमें परमेश्वर से दूर कर देते हैं।

यह आवश्यक है कि हम परमेश्वर के सुधार को ग्रहण करें। जब परमेश्वर का वचन हमें गलत मनोभावों और अविश्वास को त्यागने की शिक्षा देता है, और हम प्रार्थना में समर्पित होते हैं, परंतु उसे व्यवहार में नहीं लाते, तब हम केवल परंपरागत रूप से यीशु का अनुसरण करते हैं, आत्मिक रूप से नहीं।

प्रेरितों के काम 1 और 2

3. पवित्र आत्मा के अभिषेक की प्रतिज्ञा
अपने पुनरुत्थान के बाद यीशु चालीस दिनों तक अपने चेलों को दिखाई देते रहे और परमेश्वर के राज्य के विषय में बातें करते रहे। उन्होंने उन्हें एकत्र किया और पवित्र आत्मा के वरदान की प्रतीक्षा करने की आज्ञा दी। यह प्रतिज्ञा देने के बाद वह स्वर्ग पर उठा लिए गए।

चेलों ने प्रतीक्षा की, और पिन्तेकुस्त के दिन उन्होंने पवित्र आत्मा का अभिषेक प्राप्त किया और यीशु के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए सामर्थी बनाए गए। वही चेले जो पहले यीशु को पहचानने में असफल रहे और उसके पुनरुत्थान पर संदेह करते थे, परिवर्तित हो गए।

आज हमें स्वयं से पूछना चाहिए: क्या हमने पवित्र आत्मा का अभिषेक प्राप्त किया है? चेलों के समान । हम भी आत्मा से परिपूर्ण हों और परमेश्वर द्वारा सौंपे गए कार्य को साहसपूर्वक पूरा करें। अपने वचनों, कार्यों और जीवनशैली के द्वारा परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार का प्रचार करें। यही हमारी आध्यात्मिकता का सच्चा उद्देश्य है।

मनन

हमें यह परखना चाहिए कि परमेश्वर के वचन पर हमारा ध्यान, हमारी प्रार्थना का जीवन, और यहाँ तक कि परमेश्वर के नाम पर किए गए शारीरिक अभ्यास—ये सब हमारी आध्यात्मिकता को कितना सुदृढ़ कर रहे हैं और हमें परिवर्तन की ओर ले जा रहे हैं।

आज के कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में, जहाँ जानकारी तुरंत उपलब्ध है, सच्ची मसीही आत्मिक समझ हमें मननशील आध्यात्मिकता की ओर ले जानी चाहिए। हमारी आध्यात्मिकता हमारे जीवन को परिवर्तित करे और दूसरों के लिए भी परिवर्तन का एक आदर्श बने।



पारुसिया

रेव. मैकलाइन आनंदा

यू .बी .एम . क्रिस्त शांति चर्च, मरोल

हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनुपम नाम में आप सभी को धन्य और आनंदमय पुनरुत्थान (ईस्टर) की शुभकामनाएँ।

आप सभी के बीच यह वचन साझा करना मेरे लिए अत्यंत आनंद और सौभाग्य की बात है।

मसीही विश्वास, सिद्धांत और शिक्षाएँ कई बार समझने में कठिन होती हैं। परंतु ऐसे धर्मशास्त्रीय शब्दों को समझना हमारे मसीही विश्वास और आत्मिक जीवन की समझ को बढ़ाता है तथा हमें मसीह को और अधिक निकटता से, व्यापकताऔर गहराई से जानने में सहायता करता है। अनेक प्रश्नों और उलझनों के लिए उत्तर और स्पष्टताएँ उपलब्ध हैं। आज हम विशेष रूप से "पारूसिया" (Parousia) शब्द के विषय में विचार करेंगे।

पारूसिया एक प्रसिद्ध शब्द है, जो उस भविष्यकालीन और अन्तकालीन (eschatological) घटना को दर्शाता है, जब मसीह सम्पूर्ण सृष्टि और संसार पर अपनी पूर्ण प्रभुता प्रकट करेंगे। इसे परमेश्वर के उस अंतिम कार्य के रूप में भी समझा जा सकता है, जो उस समय घटित होगा जब मानव इतिहास अपने परमेश्वर-निर्धारित लक्ष्य तक पहुँच जाएगा। परमेश्वर का यह कार्य एक ऐसे जीवन की शुरुआत करेगा, जिसमें सम्पूर्ण मानवता परमेश्वर के शासन के अधीन होगी।

परंतु पारूसिया को लेकर कई प्रकार की उलझनें हैं—यह वर्तमान से संबंधित है या भविष्य से? यह कैसे होगा? इसलिए आइए हम इसे सरल ढंग से समझने का प्रयास करें।

ग्रीक भाषा में "पारूसिया" शब्द (जिसका उच्चारण पेयर-ऊ-सी-आ है) एक संज्ञा है, जिसका अर्थ है—"आना", "पहुंचना" या "उपस्थिति"। इस शब्द को विशेष रूप से यीशु के अन्तकालीन आगमन के लिए अपनाया गया है। नए नियम में यह शब्द किसी व्यक्ति के किसी स्थान पर आने या किसी के साथ उपस्थित होने के लिए भी प्रयुक्त हुआ है।

नए नियम में "पारूसिया" शब्द चौबीस बार प्रयुक्त हुआ है। इनमें से छह स्थानों पर इसका सामान्य अर्थ—किसी व्यक्ति के आने या उपस्थित होने—के लिए किया गया है। उदाहरण के लिए, 1 कुरिन्थियों 16:17 में पौलुस स्तिफनास, फॉर्तुनातुस और अखैकुस के आने का उल्लेख करता है। इसी प्रकार फिलिप्पियों 2:12 में यह शब्द पौलुस की उपस्थिति के लिए प्रयोग हुआ है। शेष अठारह स्थानों पर इस शब्द का प्रयोग अन्तकालीन अर्थ में हुआ है।

अधिकांश रूप से यह शब्द हमारे प्रभु यीशु मसीह के आगमन के संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है। यह समझना महत्वपूर्ण है कि बाइबल यीशु मसीह के दो प्रकार के "आगमन" की बात करती है। कुछ लोग मानते हैं कि मसीह केवल एक बार लौटेंगे, अर्थात सात वर्षों के क्लेश काल के अंत में। लेकिन कलीसिया के उठा लिए जाने (rapture) और मसीह के दूसरे आगमन

में अंतर है।

रैप्चर के समय यीशु बादलों पर आएंगे और अपने लोगों अर्थात् कलीसिया को अपने साथ ले जाएंगे। परंतु सात वर्षों के क्लेश काल के अंत में अपने दूसरे आगमन में यीशु अपने लोगों के साथ पृथ्वी पर आएंगे, अपने शत्रुओं को पराजित करेंगे और यरूशलेम में अपने सहस्राब्दी राज्य की स्थापना करेंगे।

इस प्रकार पारूसिया हमारे प्रभु यीशु मसीह का आगमन है। हमें संदर्भ को देखकर यह समझना चाहिए कि वह उनके आकाश में प्रकट होकर कलीसिया को उठा ले जाने की ओर संकेत करता है या पृथ्वी पर आकर अपने राज्य की स्थापना करने की ओर।

पारूसिया और अन्तकाल (Eschatology):

दूसरी ओर, पारूसिया शब्द का घनिष्ठ संबंध "एस्कैटोलॉजी" अर्थात् अन्तकाल-विज्ञान से है। प्रारंभिक कलीसिया पारूसिया को परमेश्वर के अंतिम न्याय के समय के रूप में समझती थी। इसी कारण पवित्रशास्त्र के लेखकों ने पारूसिया के लिए "प्रभु का दिन" शब्द का प्रयोग किया।

इब्रानी शास्त्रों में "यहोवा का दिन" परमेश्वर के इतिहास में किए गए उद्धार के कार्यों के लिए प्रयोग किया गया तकनीकी शब्द है। आमोस से पहले यह दिन आशीष और आनंद का दिन समझा जाता था, परंतु आमोस ने सिखाया कि यह दंड का दिन भी हो सकता है। इसलिए पारूसिया और अन्तकाल की घटनाएँ आपस में गहराई से जुड़ी हुई हैं।

पारूसिया का समय:

जब पारूसिया का सिद्धांत विश्वास के सामने रखा जाता है, तो स्वाभाविक रूप से यह प्रश्न उठता है कि यह घटना कब घटित होगी। यीशु और प्रेरित पौलुस की शिक्षाओं में पारूसिया का समय एक अत्यंत महत्वपूर्ण और संवेदनशील विषय है। अनेक विद्वानों का मानना है कि यीशु की शिक्षा के अनुसार पारूसिया शीघ्र होने वाली थी— अर्थात् बारह प्रेरितों के जीवनकाल में या एक ही पीढ़ी के भीतर।

पौलुस की शिक्षा में हम यह देखते हैं कि वह पारूसिया और मरे हुओं के पुनरुत्थान के बीच के क्रम को स्पष्ट करता है—पहले पुनरुत्थान और फिर पारूसिया। इसलिए यह स्पष्ट है कि पारूसिया के विषय में हमें किसी एक निष्कर्ष पर जल्दबाज़ी से नहीं पहुँचना चाहिए। हमें यह समझने की आवश्यकता है कि पारूसिया केवल भविष्य से ही संबंधित नहीं है, बल्कि यह वर्तमान से भी जुड़ी हुई है और भविष्य में पूर्ण रूप से पूरी होगी।

इस ईस्टर संस्करण का विषय है— "पुनरुत्थित मसीह से प्रेरित"।

यहाँ हमारे लिए एक बुलाहट है कि हम प्रेरित हों। पर प्रश्न यह है कि हम किस बात के लिए, कहाँ और कैसे प्रेरित हों? सामान्यतः हम प्रेरणा को केवल आत्मिक गतिविधियों तक सीमित कर देते हैं, परंतु प्रेरणा की अवधारणा इससे कहीं अधिक व्यापक है।

यदि हम पारूसिया की समझ को इसमें जोड़ें, तो हमें पारूसिया को भी एक नए और व्यापक दृष्टिकोण से समझने की प्रेरणा मिलनी चाहिए। थिस्सलुनीकियों की सोच पारूसिया को लेकर सीमित थी, परंतु समय के साथ समझ में परिवर्तन आया।

आज हमें भी परिवर्तन के लिए बुलाया गया है—एक बंजर भूमि नहीं, बल्कि एक उपजाऊ खेत बनने के लिए, ताकि बहुत से लोग उस फल का आनंद ले सकें जो हमारे जीवन और हमारी सेवकाई से उत्पन्न होता है।

हमें स्वयं पारूसिया के लिए तैयार रहना चाहिए- अर्थात् मसीह के आगमन के लिए। पर हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि यह केवल भविष्य की बात है। जैसा यीशु ने कहा, "मनुष्य का पुत्र उस घड़ी आएगा जब तुम उसकी आशा न करोगे।" यह हमें फिर से स्मरण कराता है कि हमें हर समय तैयार रहना है।

पारूसिया का अर्थ केवल उस घटना से नहीं है जो भविष्य में घटित होगी, बल्कि यह उस राज्य की ओर भी संकेत करता है जो पहले ही मसीह द्वारा आरंभ किया जा चुका है और जो भविष्य में अपनी पूर्णता को प्राप्त करेगा। इसलिए वर्तमान और भविष्य—दोनों ही दृष्टिकोण अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

पर आज की सबसे दुखद बात यह है कि पारूसिया को लेकर बहुत - सी गलत शिक्षाएँ फैलाई जा रही हैं। हमें सदा मसीह का सही प्रचार करना, सिखाना और अनुसरण करना चाहिए। आज के संदर्भ में यह स्पष्ट दिखाई देता है कि हमारे बीच कई प्रकार के "मसीह" प्रस्तुत किए जा रहे हैं—ऐसे मसीह जिन्हें उपदेशक, लोग और कभी-कभी स्वयं कलीसिया अपनी सुविधा के अनुसार बदल देती है।

परंतु हम मसीही, और विशेष रूप से मुख्यधारा की कलीसियाएँ, सच्चे मसीह का प्रचार और घोषणा करने के लिए बुलाए गए हैं—एक प्रेरित और सशक्त ढंग से। हम केवल परिवर्तन चाहने वाले नहीं, बल्कि परिवर्तन लाने वाले बनने के लिए बुलाए गए हैं।

आमीन।



मिशनरी कहानी

रेव. जॉन एलाइज़र

यू .बी .एम . क्रिस्ता प्रीति चर्च, भांडुप



Elisabeth Hebich

एलिज़ाबेथ हेबिच – महिलाओं की शिक्षा और सशक्तिकरण की सेविका

एलिज़ाबेथ हेबिच भारत में बासेल मिशन की महिला मिशनरियों में एक महत्वपूर्ण, किन्तु अक्सर कम पहचानी जाने वाली हस्ती हैं। 19वीं शताब्दी के दौरान उन्होंने अपना जीवन महिलाओं के उत्थान के लिए समर्पित किया—शिक्षा, आध्यात्मिक देखभाल और करुणामयी सेवा के माध्यम से। यद्यपि उनका नाम किसी विशेष संस्था की स्थापना से सीधे जुड़ा नहीं है, फिर भी उनका प्रभाव दक्षिण भारत में महिलाओं की शिक्षा और मसीही गठन के विकास में गहराई से दिखाई देता है।

उनके समय में भारतीय समाज में महिलाओं पर अनेक प्रतिबंध थे, विशेषकर शिक्षा और सार्वजनिक जीवन के क्षेत्रों में। इस आवश्यकता को पहचानते हुए, बासेल मिशन ने मैंगलोर और कालीकट जैसे क्षेत्रों में बालिकाओं के लिए विद्यालय स्थापित किए, जिससे महिलाओं को सीखने और आगे बढ़ने के नए अवसर मिले। एलिज़ाबेथ हेबिच ने इस व्यापक मिशन कार्य के अंतर्गत निष्ठापूर्वक सेवा की और उसके उद्देश्य को आगे बढ़ाया।

उनकी भूमिका विशेष रूप से शिक्षा के दैनिक कार्यों में महत्वपूर्ण थी। उन्होंने मिशन स्कूलों में बालिकाओं को पढ़ाया, जहाँ शिक्षा केवल पढ़ने-लिखने तक सीमित नहीं थी, बल्कि नैतिक शिक्षा और आध्यात्मिक गठन भी उसका हिस्सा था। ये विद्यालय परिवर्तन के केंद्र बने, जहाँ लड़कियों ने अपने जीवन के लिए नई संभावनाओं को देखा। एक शिक्षिका के रूप में उनकी निष्ठा ने छात्राओं में आत्मविश्वास, गरिमा और विश्वास को विकसित किया।

कक्षा के अतिरिक्त, उन्होंने महिलाओं की शिक्षा के विस्तार में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने विद्यालयों के संगठन, संचालन और स्थायित्व को सुदृढ़ करने में सहायता की। उन्होंने स्वयं कोई नया विद्यालय स्थापित नहीं किया, बल्कि पहले से मौजूद संस्थाओं को मजबूत बनाने और उन्हें प्रभावी ढंग से चलाने में योगदान दिया, ताकि वे महिलाओं और बालिकाओं की आवश्यकताओं को पूरा कर सकें।

उनकी सेवा केवल औपचारिक शिक्षा तक सीमित नहीं थी, बल्कि व्यक्तिगत और संबंधपरक सेवा तक भी विस्तारित थी। उन्होंने महिलाओं में साक्षरता और मसीही शिक्षा को बढ़ावा दिया, विशेषकर उन लोगों के बीच जो शिक्षा से वंचित थीं।

धैर्यपूर्ण संवाद, शिक्षण और आत्मिक मार्गदर्शन के माध्यम से उन्होंने महिलाओं को उनकी गरिमा और मसीह में उनकी पहचान समझने में सहायता की।

इसके अतिरिक्त, उस समय की अन्य महिला मिशनरियों की तरह, उन्होंने घर-घर जाकर भी सेवा की होगी। इससे वे उन महिलाओं तक पहुँच सकीं जो सामाजिक या सांस्कृतिक कारणों से विद्यालय नहीं आ सकती थीं। इन मुलाकातों में उन्होंने प्रार्थना, परामर्श और बाइबिल शिक्षा के माध्यम से मसीह के प्रेम और करुणा को प्रकट किया।

एलिज़ाबेथ हेबिच का योगदान भले ही बड़े पदों या सार्वजनिक मान्यता से चिन्हित न हो, परन्तु यह उन जीवनों में स्पष्ट है जिन्हें उन्होंने स्पर्श किया और जिन नींवों को उन्होंने मजबूत किया। उनका कार्य उन महिला मिशनरियों के शांत किन्तु प्रभावशाली योगदान को दर्शाता है, जिन्होंने सामूहिक मिशन के अंतर्गत निष्ठापूर्वक सेवा की।

उनकी विरासत आज भी महिलाओं की शिक्षा, सशक्तिकरण और कलीसिया में सक्रिय सहभागिता पर दिए जाने वाले महत्व में जीवित है। एलिज़ाबेथ हेबिच हमें यह स्मरण कराती हैं कि सच्चा मिशन कार्य केवल नई संरचनाओं की स्थापना में नहीं, बल्कि पहले से मौजूद कार्यों को विश्वासपूर्वक पोषित और सुदृढ़ करने में है, ताकि आने वाली पीढ़ियों के जीवन परिवर्तित हो सकें।



कलीसियाई विभाग

श्रीमती स्नेहल करकड़ा

यू .बी .एम . क्रिस्ता कारुण्या चर्च, डोंबिवली

पुनर्जीवित मसीह से प्रेरित

हर वर्ष जब ईस्टर का समय आता है, मैं अपने आप से एक सरल प्रश्न पूछता/पूछती हूँ:

पुनरुत्थान का मेरे लिए आज वास्तव में क्या अर्थ है?

केवल एक मसीही होने के नाते नहीं,

केवल एक ऐसे व्यक्ति के रूप में नहीं जो ईस्टर मनाता है,

बल्कि एक ऐसे इंसान के रूप में जो जिम्मेदारियों, अपेक्षाओं, थकान, प्रार्थनाओं, संदेहों और आशा के बीच जीवन जी रहा है।

पुनरुत्थान केवल एक कहानी नहीं है जो मैंने रविवार स्कूल में सीखी थी। यह केवल एक घटना नहीं है जिसे हम वर्ष में एक बार भजनों और सफेद वस्त्रों के साथ स्मरण करते हैं। यह अत्यंत व्यक्तिगत है। यह मेरे दैनिक जीवन में बोलता है—कक्षाओं में, बातचीत में, निराशाओं में, और सोने से पहले की धीमी प्रार्थनाओं में।

और धीरे-धीरे, वर्षों में, मैंने यह समझा है:

पुनरुत्थान केवल यीशु के कब्र से जी उठने के बारे में नहीं है,

यह उनके साथ उठना सीखने के बारे में है।

जब आशा देर होती प्रतीत होती है।

मेरे जीवन में ऐसे क्षण आए हैं जब चीजें योजना के अनुसार नहीं हुईं। ऐसी प्रार्थनाएँ जो अनुत्तरित लगीं। ऐसी परिस्थितियाँ जो अन्यायपूर्ण महसूस हुईं। ऐसे प्रयास जिन्हें कोई नहीं देख पाया।

मैं सोचता/सोचती हूँ कि चेलों ने भी कुछ ऐसा ही अनुभव किया होगा उस शनिवार को—क्रूस और पुनरुत्थान के बीच का दिन।

एक मौन का दिन।

एक उलझन का दिन।

एक ऐसा दिन जब कुछ भी समझ में नहीं आता।

हम उस शनिवार के बारे में अधिक बात नहीं करते।

लेकिन हम सब उसे अनुभव करते हैं—

वह बीच का समय,

वह प्रतीक्षा का दौर,

वह शांत अनिश्चितता।

फिर भी, रविवार आया।

पुनरुत्थान मुझे याद दिलाता है कि परमेश्वर हमेशा कार्य कर रहा है—यहाँ तक कि मेरे जीवन के शांत शनिवारों में भी। केवल इसलिए कि मैं कोई हलचल नहीं देखता/देखती, इसका अर्थ यह नहीं कि कोई चमत्कार हो नहीं रहा।

भय से साहस तक

यीशु के जी उठने के बाद भी चेले बंद कमरों के पीछे छिपे हुए थे। वे डरे हुए थे। और सच कहूँ तो, इसमें मुझे सांत्वना मिलती है। चमत्कार के बाद भी वे इंसान ही थे।

कभी-कभी हम सोचते हैं कि विश्वास का अर्थ है हमेशा मजबूत होना।

परन्तु पुनरुत्थान कुछ और दिखाता है।

यीशु ने उनके निर्भय होने का इंतजार नहीं किया।

वे उसी कमरे में प्रवेश कर गए जहाँ वे छिपे हुए थे।

कितनी बार मसीह ने मेरे हृदय के बंद कमरों में चुपचाप प्रवेश किया है?

चिंता का कमरा,

आत्म-संदेह का कमरा,

"क्या मैं पर्याप्त कर रहा/रही हूँ?" का कमरा।

एक शिक्षक के रूप में, कई दिन ऐसे होते हैं जब काम का बोझ भारी लगता है और अपेक्षाएँ अधिक होती हैं। ऐसे दिन भी होते हैं जब मैं सोचता/सोचती हूँ कि क्या मैं सच में कोई बदलाव ला रहा/रही हूँ।

फिर भी, छोटे-छोटे क्षणों में—एक छात्र की मुस्कान, धन्यवाद का एक शब्द, एक पाठ जो अंततः समझ में आ जाता है—मैं उनकी उपस्थिति को महसूस करता/करती हूँ।

पुनरुत्थान हमें साहस देता है—तेज़ और नाटकीय नहीं, बल्कि स्थिर और दैनिक सामर्थ।

मेरे अपने हृदय का पत्थर

हम अक्सर उस पत्थर के बारे में बात करते हैं जो कब्र से हटाया गया था।

परन्तु कभी-कभी मैं अपने आप से पूछता/पूछती हूँ—मेरे अपने हृदय से कौन से पत्थर हटने चाहिए?

क्या वह अभिमान है?

क्या वह तुलना है?

क्या वह पुराने दुखों को पकड़े रहना है?

क्या वह निराशा है?

पुनर्जीवित मसीह केवल कब्रों से पत्थर नहीं हटाते—वे हृदयों से भी पत्थर हटाते हैं।

ऐसे समय आए हैं जब मैंने निराशाओं को आवश्यकता से अधिक समय तक पकड़े रखा। ऐसे समय भी आए जब मैंने कृतज्ञता के स्थान पर झुंझलाहट को स्थान दिया।

फिर भी, जब भी मैं उनके पास लौटता/लौटती हूँ, वहाँ नवीनीकरण मिलता है।

पुनरुत्थान मुझे याद दिलाता है कि परिवर्तन संभव है। विकास संभव है। नई शुरुआत संभव है।

घाव जो अब भी बोलते हैं

पुनरुत्थान के मेरे पसंदीदा क्षणों में से एक वह है जब यीशु ने थोमा को अपने घाव दिखाए। उन्होंने उन्हें छिपाया नहीं, मिटाया नहीं।

पुनर्जीवित प्रभु अब भी अपने घावों को धारण किए हुए थे।

यह मुझे गहराई से सांत्वना देता है।

इसका अर्थ है कि हमारे घाव—चाहे भावनात्मक हों, आत्मिक हों या व्यक्तिगत—हमें अयोग्य नहीं बनाते। वे एक कहानी कहते हैं। वे गवाही बन जाते हैं।

कभी-कभी हम सोचते हैं कि एक मजबूत मसीही होने का अर्थ है सब कुछ ठीक होने का दिखावा करना।

परन्तु पुनरुत्थान हमें सिखाता है कि विजय पीड़ा की स्मृति को मिटाती नहीं, बल्कि उसे अर्थ देती है।

हमारी चुनौतियाँ—चाहे परिवार में, कार्य में, सेवकाई में या व्यक्तिगत संघर्षों में—व्यर्थ नहीं जातीं। परमेश्वर उनका उपयोग हमारे विश्वास को मजबूत करने और दूसरों को समझने में हमारी सहायता करने के लिए करता है।

केवल ईस्टर मनाना नहीं, उसे जीना

एक दिन के लिए ईस्टर मनाना आसान है।

हर दिन उसे जीना कठिन है—परन्तु अधिक सुंदर भी।

पुनर्जीवित मसीह से प्रेरित होकर जीने का अर्थ है:

क्षमा चुनना, जब आहत रहना आसान हो;

धैर्य चुनना, जब चिढ़ बढ़ रही हो;

ईमानदारी चुनना, जब समझौता आसान लगे;

दयालुता चुनना, जब कोई देख नहीं रहा हो।

इसका अर्थ है उन स्थानों में आशा ले जाना जहाँ भारीपन है।

हमारे स्कूलों, कार्यस्थलों और घरों में, लोग चुपचाप उन बातों से जूझ रहे हैं जिन्हें हम पूरी तरह नहीं समझ सकते। यदि मसीह सच में हम में जीवित हैं, तो उनकी शांति, उनकी नम्रता और उनकी करुणा हम में से झलकनी चाहिए।

कभी-कभी प्रेरणा ऊँची आवाज़ में प्रचार नहीं होती—

कभी-कभी वह निरंतर भलाई होती है।

एक व्यक्तिगत ईस्टर प्रार्थना

जब मैं पुनर्जीवित मसीह पर मनन करता/करती हूँ, मेरी प्रार्थना सरल है:

हे प्रभु, आपके पुनरुत्थान की शक्ति मेरे दैनिक जीवन में वास्तविक हो।

केवल बड़े चमत्कारों में नहीं—बल्कि छोटे परिवर्तनों में भी।

मुझे नकारात्मकता से ऊपर उठने में सहायता करें।

मुझे संदेह से ऊपर उठने में सहायता करें।

मुझे भय से ऊपर उठने में सहायता करें।

मुझे हर उस चीज़ से ऊपर उठने में सहायता करें जो मुझे उस व्यक्ति बनने से रोकती है जैसा आपने मुझे बनाया है।

क्योंकि यदि मसीह ने मृत्यु पर जय पाई, तो निश्चय ही वे मुझे निराशा पर विजय पाने में भी सहायता कर सकते हैं।

यदि पत्थर हटाया गया है, तो मेरे जीवन की बाधाएँ भी हट सकती हैं।

पुनरुत्थान के लोग बनना

हमारी दुनिया को केवल ईस्टर सभाओं की आवश्यकता नहीं है—उसे ईस्टर लोगों की आवश्यकता है।

ऐसे लोग जो निराश स्थानों में आशा लेकर जाएँ;

जो क्रोध के स्थान पर अनुग्रह से प्रतिक्रिया करें;

जो परिस्थितियों के डगमगाने पर भी स्थिर बने रहें।

पुनर्जीवित मसीह से प्रेरित होने का अर्थ है इस शांत विश्वास के साथ जीना कि परमेश्वर की शक्ति से बाहर कुछ भी नहीं है।

इसका अर्थ है विश्वास करना कि जब परिस्थितियाँ अंतिम प्रतीत होती हैं, तब भी परमेश्वर एक नया अंत लिख सकता है।

खाली कब्र केवल अतीत की विजय का प्रतीक नहीं है—

यह आज के लिए एक स्मरण है।

यह मुझसे कहती है:

हार मत मानो।

हिम्मत मत हारो।

भय को जीतने मत दो।

मसीह जीवित हैं।

और क्योंकि वे जीवित हैं—

मैं अनिश्चितता का सामना कर सकता/सकती हूँ।

मैं विश्वासयोग्य होकर सेवा कर सकता/सकती हूँ।

मैं हर दिन फिर से उठ सकता/सकती हूँ।

आइए हम केवल पुनरुत्थान का उत्सव न मनाएँ—

आइए उससे प्रेरित हों।

उसे जीएँ।

उसे अपने जीवन में प्रकट करें।

धन्यवाद

Email : ubmcmagazine@gmail.com
Website : www.ubmchurches.com
Contact no : 8105-349-008 / 8108- 094-057 / 8767-756-165